198 P
745
M

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1165/10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 745

Pra
20-1

745

सत्याग्रह गीतावली।

दिव्य वाणी

"यदि मेरी हत्या करने वाले व्यक्ति को सर्प काट खाय, तो मैं अपना धर्म समझता हूँ कि मरने के पहले उसके विष को चूस कर उसके प्राण बचा लूँ।"

अहिंसा के अवतार
भगवान् गांधी

सुवर्ण सिंह वर्मा आनन्द

891.431
An14S

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
10 DEC. 1930
DEPARTMENT

सर्वाधिकार स्वरक्षित।

ॐ

सत्याग्रह गीतावली।

लेखक

कविवर डाक्टर सुवर्णसिंह वर्मा "आनन्द"

H. L. M. P.

Dyeing Expert (ENGLAND)

श्रीरुक्मिणी हरण, सती परीक्षा, छत्रपति शिवाजी, वीर बंदा वैरागी, पद्य प्रवेशिका, आनन्द सरोज, बच्चा सक्का, चांडाल चौकड़ी, वीर बाला आदि के रचयिता।

प्रकाशक

श्री मुकुंद-मंदिर

बेलनगंज-आगरा।

प्रथम वार १००० | १९३० | मूल्य ≡)

ॐ

समर्पण

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 745
Date 20.12.71
GOVT. OF INDIA

"सैनिक" संपादक

तथा

सत्याग्रह संग्राम (आगरा) के सुयोग्य संचालक

साहित्यालंकार

श्री पं० श्रीकृष्णदत्तजी पालीवाल

की

नमक क़ानून संबंधी जेल यात्रा की

पवित्र स्मृति में

यह गीतावली सादर न्योछावर है।

१८ जून १९३०

आनन्द।

ॐ

वीर वाणी

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।
अनार्य जुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥

हे अर्जुन ! इस विकट समय में तुम्हारे मन में यह महा मोह कहां से आघुसा । इसे भले लोग पास भी नहीं आने देते यह नीच गति को प्राप्त कराने वाला और अपयश का देने वाला है ।

क्लैव्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतपः ॥

हे कुन्तीपुत्र ! नामर्द मत बनो, यह तुम्हें शोभा नहीं देता हे शत्रुओं के दिल दहलाने वाले । हृदय की इस ओछी दुर्बलता को छोड़कर उठ खड़े हो !

प्रभु-प्रतिज्ञा ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः ।
अभ्युत्थानमपि धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

जब जब संसार में धर्म की ग्लानि होती है, हे अर्जुन तब तबमें धर्म का उद्धार करने के लिये स्वयं अवतार ग्रहण करता हूं ।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

साधु जनों के पालन करने तथा दुष्टों को नष्ट करने के लिये मैं हर युग में अवतार लेता हूँ ।

श्रीमद्भगवद्गीता ।

वन्देमातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलां शस्यश्यामलां-मातरम् । वन्दे ॥
शुभ्र ज्योत्स्नां पुलकित यामिनीं ।
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीं ।
सुहासिनीं, सुमधुर भाषिनीम् ।
सुखदां वरदां मातरम् । वन्दे ॥
त्रिंश कोटि कंठ कलकल निनाद कराले ।
द्वित्रिंश कोटि भुजैर्धृत खर करवाले ।
के बोले मां । तुमी अवले !
बहुबल धारिणीं, नमामि तारिणीम् ।
रिपुदल वारिणीं मातरम् ॥ वन्देमातरम् ॥

झंडा गान ।

झंडा ऊंचा रहे हमारा ।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा । झंडा ऊंचा रहे हमारा ।
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला ।
वीरों को हर्षाने वाला, मातृ भूमि का तन मन सारा ।
झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥
स्वतंत्रताके भीषण रणमें, लखकर बढ़े जोश क्षणक्षणमें ।
कांपें शत्रु देखकर मनमें, मिट जाये भय संकट सारा ।
झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

इस झण्डे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय।
बोलो भारत माता की जय, स्वतन्त्रता है ध्येय हमारा।
झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ।
एक साथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा।
झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

इस की शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये।
सकल विश्व में यह फहरावे, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।
झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

ॐ

❀ जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ❀

✱ वन्देमातरम् ✱

सत्याग्रह गीतावली।

जननी जन्म भूमि की आरती।

जय जय भारत जननी।

धन धन मात हमारी, हे मंगल करनी ॥जय०॥

सकल विश्व से न्यारी, महिमा अतिभारी।

प्राणों से अति प्यारी, हे सुन्दर वरनी ॥जय०॥

ऋद्धि सिद्धि संपूरित, जय जग सुख करनी।

शीश हिमालय शोभित, सिन्धु चरण धरनी ॥जय०॥

तीस कोटि की जननी, हे दानव दलिनी।

राम कृष्ण की माता, बुद्ध बुद्धि भरनी ॥जय०॥

ऋषि मुनियों की खानी, सुख सौरभ सानी।

सत चित "आनँद" करनी, हे संकट हरनी ॥जय०॥

जय जय भारत जननी ॥

ईश-प्रार्थना ।

दीनबंधु दीनानाथ दीन पै दया करो ।
प्रेम पुंज प्राण नाथ प्रेम की प्रभा करो ।
शेष शक्ति शांति शील शोभिताँ शिरोमणे ।
सुमन सुघर सुलभ सुखद सुमधुरे सुधाधरे ।

विनती

हे प्रभु पार लगादो नैया, हे दुखभंजन हितकारी ।
हरो कलेश महेश खिवैया, शुद्ध निरंजन बनवारी ॥
हमारे मुल्क में क्यों ज़ुल्म रोज़ होते हैं ।
तड़प के भूक से हम प्रान रोज़ खोते हैं ।
खुश्क हैं चश्म बिला अश्क आज रोते हैं ।
हाय इस देश के क्यों भक्त आज सोते हैं ।
तुही है प्रभु प्यारा हमारा रखवारा, जगत् उजियारा
"आनन्द" कारी गिरधारी ।

सत्याग्रही की प्रतिज्ञा ।

दोहा ।

निर्बल के बल हे प्रभो, करहु कृपा की कोर ।
अशरण शरण चरण करी, अर्पण जीवन डोर ॥

सदा सत्य पर दृढ़ रहूँ, भारत हित चित लाउँ।
हिंसा मन वच कर्म तजि, सत्याग्रही कहाउँ॥
केवल खादी धारिहों, लेकर चरखा अस्त्र।
भारत की सेवा करहुँ, त्यागि विदेशी वस्त्र॥
गरे लगाउ अछूत जन, कर मदिरा प्रतिरोध।
तन मन धन अर्पण करहु, भारत हित अविरोध॥
क्रीड़ा जीवन मरण लखि, करहु काम निष्काम।
राष्ट्र सभा से नाचहूँ, निज सेवा के दाम॥
गारी मार हजार सहि, सहिहों जीवन त्राण।
क्रोध करहुं नहिं शत्रु पर, हँसि हँसि दैहों प्राण॥
"हिमुईपा" सब एक हैं, भारत मा के पूत।
जो भारत के शत्रु हैं, साँचे वही अछूत॥
शासक जदपि विदेस के, शासित भारत खून।
भद्र अवज्ञा से करहुँ, भंग सभी कानून॥
जेल खेल सम निरखि कर, फांसी हांसी जान।
शांति क्रांति पर मर मिटे, सत्याग्रही सुजान॥
जीवन जीवन एक है, मृत्यु एक ही बेर।
मर मिटना "आनंद" से, शंका कैसी फेर॥

———

नोट:—हिमुईपा=हिंदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी

आज़ादी की खेंचतान ।

सैकड़ों ही पास होते हैं रिज़ोल्यूशन जहां ।
किस तरह से पाएँगे हम कारे सोल्यूशन वहां ॥
गर हुआ कांग्रेस का सचमुच इवौल्यूशन यहां ।
ले खबर यारब न होजाए रिवौयूल्शन यहां ॥
ग़ैर मुल्कों की हुई सरकार अपने देश में ।
क्यों न हो फ्रीडमकी टग औफ वार अपने देश में ॥

Resolution=प्रस्ताव ।
Solution=हल, फैसला ।
Evolution=जागृति ।
Revolution=ग़दर ।
Freedom की Tug of war आज़ादी की खेंचतान ।

श्री राष्ट्रपति पंडित मोतीलालजी नेहरू की सेवा में सादर समर्पित ।

षटपदी ।

भारत भू के "लाल", भाल के मोती प्यारे ।
दुष्ट दलों के काल, देश के राज दुलारे ॥
नाहर "निहरू" नाह, नेह की नहर बहादो ।
दुष्टों का दल दाह, दाह कर कहर मचादो ॥

कड़ कड़ कड़के क्रांति सी, फड़ फड़ फड़कें वीर हिय।
निरे अहिंसा युद्ध सों, धड़ धड़ धड़कें शत्रु हिय ॥

(२)

भारत भर में शंख, फूँक कर क्रान्ति मचादो ।
हिन्दू मुसलिम मध्य, हृदय की आग बुझादो ॥
देखा आंखों न हो, वही करके दिखलादो ।
मुर्दा भारत जाति, हुई है इसे जिलादो ॥
बलि वेदी पर देश की, जल जल कर हम मर मिटें।
भारत माता हो सुखी, भले हमारे सर कटें ॥

(३)

बलि वेदी पर देर, नहीं अब सर कटने की ।
मन मंदिर में साध, भरी है मर मिटने की ॥
सत्याग्रह का अस्त्र, धार रण में डटने की ।
दुर्बल हिन्दी जाति, नहीं पीछे हटने की ॥
इस कुत्ते-जीवन से भला, मर जायें उन तीस में ।
जिऐं तो जब स्वाधीन हो, यह भारत सन् तीस में ॥

हमारा प्रण ।

पापी करके पाप सताले जितना तेरा जी चाहे ।
निर्दोषी का शीश उड़ादे तन से तेरा जी चाहे ॥

तीर तोप तलवार दिखाकर हमको व्यर्थ डराता है ।
क्या सत्याग्रह करने वाला (भी) मृत्यु से घबराता है ॥
हम प्रसन्न चित आ बैठे हैं अपना सब कुछ खो कर भी ।
अटल रहेंगे अपने प्रण पर टुकड़े टुकड़े होकर भी ॥

आज़ादी का ध्यान ।

(१)

तुम्हें मारते देख देख कर हम भी मरना सीखेंगे ।
तुम्हें दौड़ते हुये देख हम आगे बढ़ना सीखेंगे ॥
जननी के सेवक हो तुम हम सेवा करना सीखेंगे ।
तुमसे ज्यादा आज़ादी पर कटना मरना सीखेंगे ॥
बहुत सो चुके गई नींद अब आँख न फिर से मींचेंगे ।
हम स्वतंत्रता का बिरवा निज रुधिर बहा कर सींचेंगे ॥

(२)

मारो पीटो क़ैद करो कोड़े लगवाओ जलवादो ।
सर फोड़ो हाथों को तोड़ो मूं से जीभ निकलवादो ॥
फांसी पर लटकादो हमको तेज तवे पर तलवादो ।
तीर तोप तलवार और आरे इस सर पर चलवादो ॥
देश प्रेम का नशा न ज़ालिम इस तुर्शी से जायेगा ।
बच्चा बच्चा भारत का आज़ादी पर मर जायेगा ॥

आदर्श सभ्यता ।

(१)

आँख भी हैं सुनते भी हैं ताक़त भी है औ होश भी है ।
गो आलस की निद्रा में हैं बेहोश नहीं कुछ होश भी है ॥
यदि कष्ट हज़ारों हैं फिर भी हम दुखी नहीं संतोष भी है।
फांसी का तख्ता भी है औ माता की आग़ोश भी है ॥
सुख सौरभ को लात मार दी मरने को तैयार हुये ।
तन मन धन से माँ की सेवा करने को तैयार हुये ॥

(२)

मत सिखला लाठी तलवार चलाना—हमें न आ जाये ।
तेरी ही तलवार के नीचे तेरा गला न आ जाये ॥
गढ़ा हमारे लिये न खोद उसमें तू खुद न समा जाये ।
आग हमारे लिये जला कर खुद ही भस्म न हो जाये ॥
कांटे तू बोता है हमको पर हम फूल बिछाते हैं ।
नर पिशाच ले देख सभ्यता देवनुकूल सिखाते हैं ॥

शांत क्रांति ।

—:बीर छन्द:—

मर मिटने की साध उठी है वीरों में जिमि सरल उमङ्ग ।
रह रह कर तन में बहती है, हृदय रक्त की तरल तरङ्ग ॥

बिना अस्त्र औ बिना शस्त्र के जब हम करते हैं रण रङ्ग ।
तोप तमंचा बन्दूकों से कायर करते हैं हुरदङ्ग ॥
ऋषियों और राक्षसों का है ठना युद्ध पर बेपासङ्ग ।
इधर धर्म है और तपस्या उधर उद्धता और उचङ्ग ॥
इधर सत्य है और अहिंसा, उधर झूंठ पाखंडी ढङ्ग ।
इधर बली बजरंग बहादुर, उधर निशाचर नङ्गमनङ्ग ॥
सत्याग्रह के सेनापति का जब से हुआ अटल भ्रूभङ्ग ।
शांति क्रांति की बलि वेदी पर आज चढ़ा है गहरा रङ्ग ॥

भूखे अन्न दाता ।

मनहरण

शीत घाम आंधी मेह में भी करैं खेत नित्त,
भूख के अंगारे पेट बीच भड़कत हैं ।
रैनि अँधियारी तापै कारी घटा छाई भारी,
कड़कि कड़कि घन बीजु कड़कत हैं ॥
रक्त की कमाई कीनी शासक कसाई छीनीं,
वारे औ लवारे मारे फाके फड़कत हैं ।
देखो भगवान को विधान विपरीत भयो,
अन्न दाता आज अन्न बिन तड़फत हैं ॥

शांत क्रांत ।

(घनाक्षरी)

मूल दासता की खोद, भूलको सुधार लेंगे,
फूली सम फेंक देंगे, भूल लवलेश में ।
देखेंगे उपनिवेश, स्वप्न उनतीस तक,
तीसमें सुराज नीम डालेंगे सुदेश में ॥
ब्रह्मा त्याग देंगे ब्रह्म विष्णु त्याग देंगे विश्व,
शक्ति ना रहेगी शेष विष की महेष में ।
भारत के वीर यदि बोल बंदेमातरम्,
शांति पूर्ण क्रांति कर देंगे इस देश में ॥

झंडा झुकनेन दो ।

फूंक ही दिया है जब शंख महाभारत का,
जौलौं न सुराज मिले युद्ध रुकने न दो ।
देश के दिवानो मरदानो नौजवानो सुनो,
देश बीच दासता की कील ठुकने न दो ॥
डायर ओडायर की पेंनशिनें बंद करो,
भारत की द्रव्य अब व्यर्थ फुंकने न दो ।
देश का सहारा है करारा क्रांतिकारियों का।
हिन्द का तिरंगा प्यारा झंडा झुकने न दो ॥

गांधी सरदार ।

मालोपमालंकार

नश्व जिमि विश्व पर, दीर्घ जिमि ह्रस्व पर,
वीर जिमि अश्व पर, पायो अधिकार है
रावण पै राम जैसे, कंस पर श्याम जैसे,
वीर बलराम जैसे, मेर्‍यो रिपु भार है ॥
शक्ति जिमि दाप पर, तेज जिमि ताप पर,
पुन्य जिमि पाप पर, करत प्रहार है ।
सिंह जिमि स्यार पर, ब्यारि जिमि वारि पर,
त्यों ही सरकार पर, गाँधी सरदार है ॥

अन्तिम विनय ।

राष्ट्र के मंदिर के मैमार ।
करो निर्माण क्रांतिका द्वार ॥
सुख सौरभ संपन्न बनो लेकर मानव अधिकार ।
भारत की जीवन आशा के खोलो चारों द्वार ॥
करो फिर नव जीवन संचार ।
राष्ट्र के मंदिर के मैमार ॥
सुखमें दुखमें सदा तुम्हीं पर है माता का प्यार ।
इस वृद्धा भारत माता के हो तुम ही आधार ॥

करो तुम इसका बेड़ा पार।
राष्ट्र के मंदिर के मैमार॥

चढ़कर आज़ादी की बलिवेदी पर हो बलिहार।
असमंजस में पड़े विश्व व्याकुल हो सब संसार॥

मचादो ऐसा हाहाकार।
राष्ट्र के मंदिर के मैमार॥

'दत्त' चित्त हो 'भारत' बनो तुम भीष्म प्रतिज्ञा धार।
हो सच्चे सत्याग्रह से कंपित सारा संसार॥

हार माने भारत सरकार।
राष्ट्र के मंदिर के मैमार॥

या स्वतंत्र होकर रहना या भरदो कारागार।
अथवा मरकर अमर बनो कर माता का उद्धार॥

देश भारत के प्राणाधार।
राष्ट्र के मंदिर के मैमार॥

शहीदों का खून।

कह दीजिये ख़ामोश क्यों हैं क्या ज़ुबां नहीं?
हम चाहते सरकार तेरा सायबां नहीं॥
देखे हैं बहुत गर्दिशे चर्खे सितमगरां।
समझेंगे इस फ़लक को हम अब आसमां नहीं॥

बेकस की एक चीख़से हो जायेंगे टुकड़े ।
कहदो ज़रा सय्याद से हो शादमां नहीं ॥
इश्क़े वतन का लुत्फ़ दलेरों के दिलमें है ।
गुलचीं की जाँ नहीं है अगर आशियां नहीं ॥
होता है ग़ज़ब क़हर क़यामत व ज़लज़ला ।
मज़लूम की निकली हुई रुकती फ़ुगां नहीं ॥
लोहे के कड़े हैं मुझे बेकार ऐ हज़रत !
क्या ज़ोरो ज़ुल्म आपका अब पासबां नहीं ॥
सुनते हैं कि सन तीसमें आयेगी क़यामत ।
रहती है यहां सल्तनत या हुक्मरां नहीं ॥
लायेगा रंग ख़ून शहीदों का एक दिन ।
बेशक वतन परस्ती कभी रायगाँ नहीं ॥

समर संगीत ।

लावनी ।

सुनकर भारत माता की आज दुहाई ।
हम तो रणमें मरने जाते हैं भाई ॥

(१)

जब से छलिया शासक ने जाल पसारा ।
मिट गया मान अभिमान गुमान हमारा ॥
धर धर कर भारत वीरों को धर मारा ।
हर लिये प्राण लाला ने जब ललकारा ॥

अब रक्षक भक्षक शासक हुए कसाई ।
हम तो रणमें मरने जाते हैं भाई ॥

(२)

अब भाँति भाँति के कर हम पर लगते हैं।
फिर भी हम ऐसे सोये ना जगते हैं ॥
दिन भर किसान जो मिहनत कर थकते हैं ।
वे भी भूखे रहते सोते जगते हैं ॥
जाके न लगे का जाने पीर पराई ।
हम तो रणमें मरने जाते हैं भाई ॥

(३)

ले खूब लगान किसान बिचारा लूटा ।
पर भूखा मरा मजूर कि धंधा छूटा ॥
बिन अन्न दीन का हाय करेजा टूटा ।
जब लगा नमक पर कर तो भंडा फूटा ॥
वे गिरे कुए में जिन खोदी थी खाई ।
हमतो रणमें मरने जाते हैं भाई ॥

(४)

जब साठि कोटिका वस्त्र विदेशी आया ।
भर पेट न कोरी धुनियों ने फिर खाया ॥
लद गई विलायत सब भारत की माया ।
इतने पर भी दुष्टों को तरस न आया ॥
अब देश विदेश हुई उनकी रुसवाई ।
हम तो रणमें मरने जाते हैं भाई ॥

(५)

हम तो जाते हैं पर तुम यह सुन लेना ।
है भली गुलामी या सुराज चुन लेना ॥
जो लेना हो तुमको सुख से लेलेना ।
पर बिना हुये स्वाधीन चैन मत लेना ॥
मत होने देना अपनी जगत हँसाई ।
हम तो रणमें मरने जाते हैं भाई ॥

(६)

अब तीर तोप तलवार तेग का भय क्या ।
है अमर आत्मा सदा देह का क्षय क्या ॥
यदि रक्त बहा रिपु का तो ऐसी जय क्या ।
हम दिखा रहे हैं हिंसा हीन विजय क्या ॥
हमने मरने की सुंदर बेला पाई ।
हम तो रणमें मरने जाते हैं भाई ॥

(७)

हम आज़ादी की शुरू जंग कर देंगे ।
बस नमक बना क़ानून भंग कर देंगे ॥
बी नौकर शाही तुझे तंग कर देंगे ।
ले विजय विश्वको आज दंग कर देंगे ॥
तुम सुखी रहो है तुम्हें अनेक बधाई ।
हम तो रणमें मरने जाते हैं भाई ॥

(८)

रणमें आओ ऐ भारत की सन्तानो ।
बल दिखलादो बलि होकर ऐ बलवानो ॥
फिर सत्याग्रह संग्राम शत्रु से ठानो ।
है ईश्वर अपनी ओर सत्य यह मानो ॥
अब भी नहिं चेते तो होगी रुसवाई ।
हम तो रणमें मरने जाते हैं भाई ॥

राजनैतिक आंधी ।

फिर वही पहली सी आंधी हिंद पर आने को है ।
बुज़दिलों में जोशे गांधी फिर से भर जाने को है ॥
फिर से शैदाए वतन क़ुरबान होंगे देश पर ।
फिर से Central और District जेल भर जाने को है ॥
ज़िन्दगी और मौत का होगा निराला खेल यह ।
आज हर जांबाज़ आज़ादी पै मर जाने को है ॥
शौक़ से मर जाएंगे हम देश के फ़रमान पर ।
आज बच्चा बच्चा अपना काम कर जाने को है ॥
सैकड़ों ही साल गुज़रे हैं गुलामों की तरह ।
आज हम रिन्दोंसे ख़ुद सरकार डर जाने को है ॥
या हमें मिलती है आज़ादी या सर जाने को है ।
देखिये कब तक गुलामी सर से टर जाने को है ॥

जेल या सुसराल ।

जब अर्ल रसल छूट जायेंगे नुकेल से ।
हम भी सुराज पायँगे पंजाब मेल से ॥
हर रोज़ के झगड़ों का नतीजा यही हुआ ।
कहने लगा हर आदमी सुसराल जेल से ॥
मांगे से जब नहीं मिला छीनें न क्यों सुराज।
लड़ती है गवर्मेंट क्यों मिस्टर पटेल से ॥
डोमीनियन सुराज का झगड़ा बुरा हुआ ।
बिगड़ा है होलसेल का सौदा रिटेल से ।
क्यों रूस के हौआ का अमीरों को खौफ़ है।
लाखों ही मर रहे हैं रोज़ हार्ट फ़ेल से ॥

ख़िदमते मुल्क ।

भलाई क़ौमकी ख़ुद करके सिखाना होगा।
किस तरह मरते हैं मरकर के दिखाना होगा ॥
तीर तलवार तबर खाके या होकर कुरबाँ ।
हर तरह क़ौम की इज़्ज़त को बचाना होगा ॥
जां हथेली पै धरे फिर रहे हैं दीवाने ।
"जिंदा बाद इन्कक़लाब" आख़िर यही गाना होगा ॥
मादरे हिंद की किश्ती जो बही जाती है ।
खुद हमें खे के इसे पार लगाना होगा ॥

रो चुके उम्र भर तक़दीर पर रोने वाले ।
हँसते हँसते हुए अब जान गँवाना होगा ॥
महल दरबार की ख्वाहिश नहीं रही हमको ॥
जेल खाना ही दीवानों का ठिकाना होगा ।
अपना साया भी साथ दे न दे ख़ुदा जाने ॥
वक़्त मुश्किलमें हरइक अपना बिगाना होगा।
ऐशो इशरत की तमन्ना नहीं बाक़ी है अब ॥
ख़िदमते मुल्क में अब जान गँवाना होगा ॥

विजय की बीणा बजने दो।

हर्ष हर्ष नव वर्ष आज उत्कर्ष सजे हैं साज ।
शस्य श्यामला भारतभू के भाग जगे हैं आज ॥
स्वदेशी सैनिक सजने दो ।
बिजय की बीणा बजने दो ॥
हिन्दू मुसलिम और क्रिश्चियन तथा पारसी लोग।
भ्रातृ भाव से गले मिलें सब त्याग परस्पर सोग ॥
प्रेम के रँग में रँगने दो ।
बिजय की बीणा बजने दो ॥
समझ सोच कर ही हम अब तक रहे शान्त अनजान।
आज़ादी की बलि वेदी पर होंगे अब बलिदान ॥

नींद से हमको जगने दो ।
बिजय की बीणा बजने दो ॥
शांति शस्त्र से क्रांति मचा कर करें घोर संग्राम ।
आज अहिंसक समर क्षेत्र में हो भारत का नाम ॥
भगोड़े दल को भगने दो ।
बिजय की बीणा बजने दो ॥
चरखा चक्र कवच खादी की करघा तोप सम्हार ।
लंका शायर की लंका को देंगे आज पजार ॥
बिदेशी कपड़ा तजने दो ।
विजय की बीणा बजने दो ॥
रहै स्वतंत्र हमारा भारत हे प्रभु परमानंद ।
बिजय बधाई है भारतमें चहुँ दिशि कवि "आनंद" ॥
भजन भारत का भजने दो ।
बिजय की बीणा बजने दो ॥

तमन्ना ।

वीर योधा महात्मा गांधी के प्रति ।

मरहबा देश पर जी जान लड़ाने वाले ।
शेर दिल सर सरे मैदान अड़ाने वाले ॥
देश में धूम आज़ादी की मचाने वाले ।
जड़ गुलामी की जहन्नुम में मिलाने वाले ॥

देश की सब्ज़ उमीदों का बाग़बाँ तू है ।
करोड़ों भूखों ग़रीबों का पासबां तू है ॥१॥

झुकाया जिसने सर सरकार का वो सर तू है ।
बस हम ग़रीबों की आहों का इक असर तू है॥
निज़ामे नज़्म में तहरीर बे नसर तू है ।
अपनी फूली फली उम्मीद का शजर तू है॥
तुम्हें बे ताज का यह ताज मुबारिक होवे ।
तुम्हें सन तीस का सौराज मुबारिक होवै ॥ २॥

बन के इकबार योगी कृष्ण दिखा भारत का ।
फूंक दे फिर से वही शंख महा भारत का॥
फिर सिखादे सबक़ हक़ जायज़ो परमारथ का ।
उछल पड़े दिले मायूस फिरसे पारथ का॥
न लोभ जान का लालच न हो हमें घर का ।
डटेंगे युद्ध में करके कलेजा पत्थर का ॥३॥

देश को दीन को इस क़ौम को आज़ाद करें ।
खोद ज़हरीली गुलामी की जड़ बरबाद करें॥
सुराज लेके अहिंसा से हम दिल शाद करें ।
फिर वही भूला आज़ादी का सबक़ याद करें॥
सर में सौदा है यही शौक़ से जीना है यही ।
ख़िदमते मुल्क में मर जायें तमन्ना है यही॥४॥

सत्याग्रह का बिगुल।

(राग पीलू)

बिगुल बजा है सत्याग्रह का रण थल में अड़ जाना होगा ।
हँसते २ बलि वेदी पर गौरव से चढ़ जाना होगा ॥
जीवन की है ज्योति अनूपम इसको आज बुझाना होगा ।
रण चण्डी को युद्ध भूमि में मर कर तुम्हें रिझाना होगा ॥
ऐ जीवन मद के मतवाले नींद त्याग कर शस्त्र उठाले ।
उठ पड़ ऐ मद होश युद्ध में सोना और सुलाना होगा ॥
शत्रु कोप की प्रबल प्रचंड ज्वाल में आहुति दैनी है ।
उफ तक मुँह से बिना निकाले हँस २ कर जल जाना होगा ॥
मात्र भूमि के दर्द भरे करुणा क्रन्दन को सुन करके ।
रक्त ऋनी सैनिकगण मां को आज स्वतंत्र कराना होगा ॥
धर्म अहिंसा पर दृढ़ रह कर जीवन की बलि दे दो वीर ।
जती जतीन दास सम भूखों तड़प तड़प मर जाना होगा ॥
प्राणों की बाजी का सौदा प्रेम से करलो ऐ वीरो ।
जीवन और मृत्यु का पल २ पर इक खेल खिलाना होगा ॥
प्रेम धर्म के प्रेम विश्व में सदा प्रेम जय पाता है ॥
इसी तत्व को सन्मुख रख कर प्रेम भाव दरसाना होगा ॥

नया गीत।

उठो आर्य वीरो नया गीत गायें।
अछूतों को चल के गले से लगायें॥

(१)

न जब तक कि हम इनसे दिल से मिलेंगे।
न जब तक कि हम साथ इनकेचलेंगे।

ज जब तक ये हम से हिलेंगे मिलेंगे ।
न तब तक हृदय पुष्प इनके खिलेंगे ।
खुशी से फड़कती हैं अपनी भुजायें ।
अछूतों को चल के गले से लगायें ॥

(२)

इन्हीं के हैं हम औ हमारे यही हैं ।
हम इनके हैं अपने सहारे यही हैं ।
सदा देश भारत के प्यारे यही हैं ।
श्री कृष्ण जी के दुलारे यही हैं ।
इन्हें प्रेम वीणा बजा के सुनायें ।
अछूतों को चल के गले से लगायें ॥

(३)

जगत एक है जग्त का एक स्वामी ।
न छोटा बड़ा कोई सेवक न स्वामी ।
यही विश्व का है नियम एक नामी ।
करें क्यों भला आज हम भी ग़ुलामी ।
सुस्वाधीनता का यह डंका बजायें ।
अछूतों को चल के गले से लगायें ॥

(४)

चलो आज हम जाति पांती को छोड़ें ।
ये बंधन द्विजाती विजाती के तोड़ें ।

नई राह पर अश्व उन्नति का मोड़ें ।
पुरानी कुरीतों के हम शीश फोड़ें ।
यही धर्म की राह सबको दिखायें ।
अछूतों को चल के गले से लगायें ॥

माडरेटों का झुनझुना ।

काउंसिल राज देगी शीघ्र ही सुराज देगी,
ऐसे झूठ भाखें हमें राखें जो अंदेसे में ।
हांजी हांजी करते खुसामदी टिपै न जिन्हें,
ऐसे टटपूँजिये हैं मित्र देखो जैसे में ॥
किंतु दशा देख के विदेश के उचक्के कहें,
मारो हाथ यारो मत सोचो कुछ ऐसे में ।
रोयें गला फारें हिंदवासी जो सुराज मांगें,
झुनझुना दिलादो सरकार एक पैसे में ॥

कठिन समस्या ।

खंड खंड होंगे ताप शत्रु के प्रचंड पाप,
प्रबल अखंड ऐसी गाँधी की तपस्या है ।
सांप औ छछूंदर की गति की विलाइत की,
लंदन की पूर्णिमा में घोर अमावस्या है ।
बुद्धि विपरीत भई सत्य है विनाश काले,
रावणी सभा की सरकार भी सदस्या है ।
हिंद को स्वतंत्र करें भूखे मरें या न करें,
ब्रीटिन के आगे आज कठिन समस्या है ।

देश सेवा ।

राष्ट्रीय गायन ।*

देश भारत की सेवा करेंगे ।
हम इसी पर जियेंगे मरेंगे ।
इसकी जलवायु ने हमको पाला ।
इसने शिक्षा दे हमको संभाला ।
इसको तारेंगे और हम तरेंगे ।
हम इसी पर जियेंगे मरेंगे ।
अब मुसीबत ने भारत को घेरा ।
छा गया क्लेश दुख का अन्धेरा ।
प्राण इस पर निछावर करेंगे ।
हम इसी पर जियेंगे मरेंगे ।
हम सभी हिंद के हैं हितैषी ।
देश वाले हैं या हैं विदेशी ।
शीश चरणों पै इसके धरेंगे ।
हम इसी पर जियेंगे मरेंगे ।

---

*कविवर "आनन्दजी" कृत वीर रस प्रधान वीर बंदा वैरागी नाटक से उधृत-मूल्य ॥=)

सत्याग्रह–गीतावली

सत्याग्रह संग्राम के सेनापति, अहिंसा के पुजारी

भगवान् गांधी ।

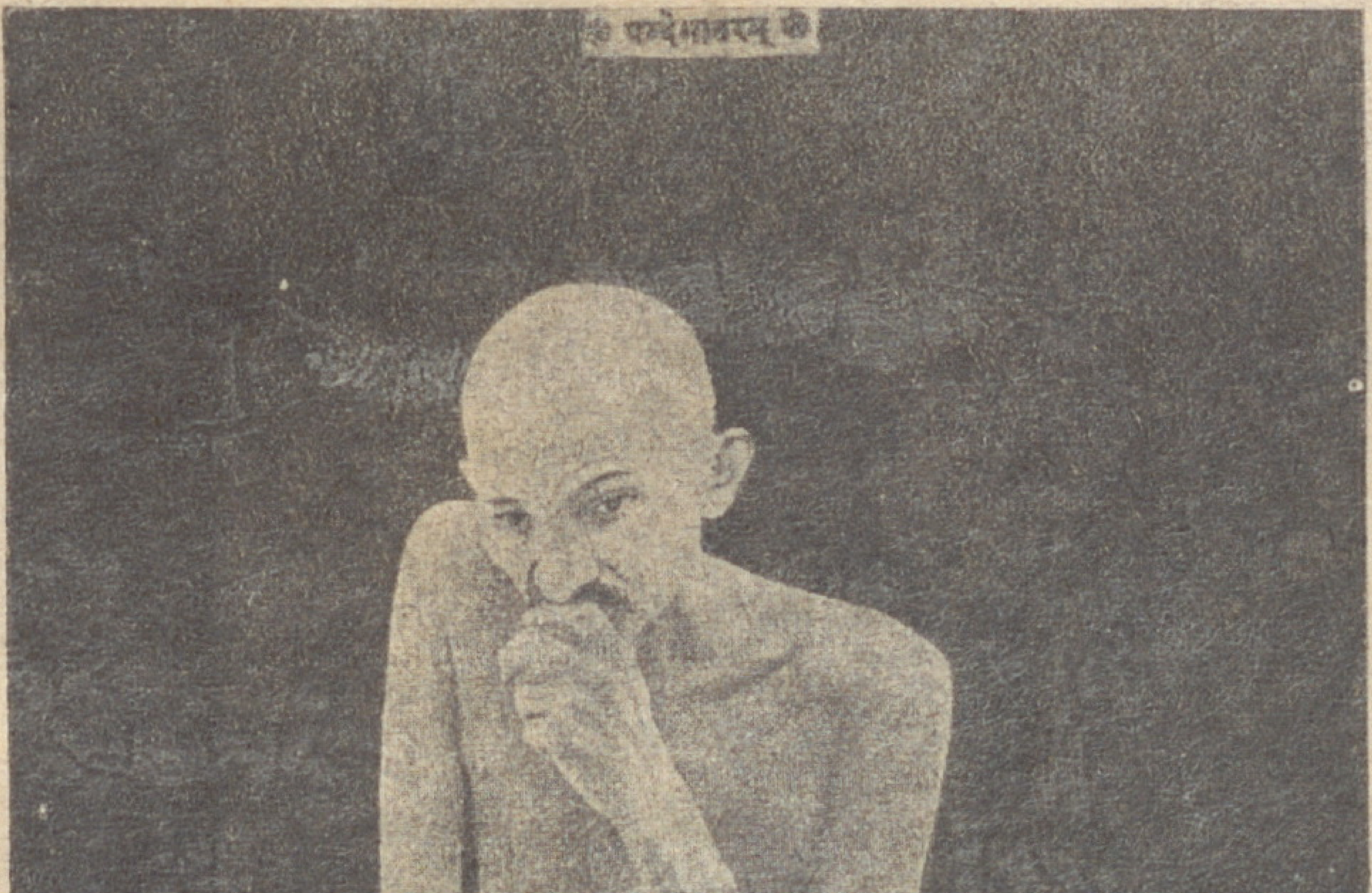

विश्व विभूति का स्वागत ।

(श्री प्रेम महा विद्यालय वृन्द्रावन की ओर से ।)

भव्य भारत भू के भगवान ।
तुम्हारा स्वागत श्रेष्ठ सुजान ॥
स्वागत स्वागत हे भारत माता के सांचे पूत ।
हृदय लगाये भेद भाव तजि करके छूत अछूत ॥
किसानों के जीवन धन प्रान ।
तुम्हारा स्वागत श्रेष्ठ सुजान ॥
अटल धैर्य से जटिल समस्या भारत की सुलझाय ।
कुटिल नीतिके हृदय पटल पर शीतल अग्नि जलाय ॥
करो भारत का पुनरुत्थान ।
तुम्हारा स्वागत श्रेष्ठ सुजान ॥
चरखे का ले चक्र सुदर्शन धारि विराट स्वरूप ।
हाहाकार मचादे भारत में भारत के भूप ॥
सदा गूंजे चरखे की तान ।
तुम्हारा स्वागत श्रेष्ठ सुजान ॥
भूखे नंगों की लज्जा रख भाव भरे भरपूर ।
खद्दर की चद्दर से सब के किये दलिद्दर दूर ॥
धन्य भारत मां के अभिमान ।
तुम्हारा स्वागत श्रेष्ठ सुजान ॥
उस प्रताप के ही प्रताप से यह विद्यालय जान ।
इस शिक्षालय के प्रताप से युवक हुए बलवान ॥
गुरू का गावें गौरव गान ।
तुम्हारा स्वागत श्रेष्ठ सुजान ॥

स्वतंत्रता की वेदी पर हम करें प्राण बलिदान।
ऐसा पाठ पढ़ादो बाबा जिससे हो कल्यान॥
हमारे हो आदर्श महान।
तुम्हारा स्वागत श्रेष्ठ सुजान॥

हमारा देश।

हिमगिरि का शिर छत्र महासागर पद पद्म पखारा है।
ऋषि मुनियों का महादेश जो सकल विश्व से न्यारा है।
जिस स्वदेश ने समय समय अवतारों को अवतारा है।
हिंसक खल को निश्चर दल को छल बल से दल मारा है।
जिसने अपनी जलवायू से हमको पाल सुधारा है।
गर्व सहित फिर क्यों न कहें हम भारत देश हमारा है॥१॥
उसी देश में अब नौकरशाही ने पांव पसारा है।
जिसने जलियांवाला में दी बहा रुधिर की धारा है।
जिसने जती जतीनदास को भूखों तड़पा मारा है।
जिसने दत्त भगत से मत्त महावीरों को मारा है।
अपने ही घर में ग़ैरों ने लालाजी को मारा है।
ए दुनिया वालो सच कहदो क्या भारत देश हमारा है॥२॥

देश की लाज।

मनहरण

गोखले तिलक लालाजी जती जतीनदास,
तात ही की भांति मात आपको निहारे है।

वैरियों के हाथ कलपाती बिलखाती हाय,
नैन सों बहाती नीर आस के सहारे है ॥
रक्षक भयो है आज भक्षक अनीति देखो,
शासक दुधारी असि हाथ में सम्हारे है ।
देश के दिवानो नौजवानो मरदानो सुनो,
भारत की लाज हाथ केवल तुम्हारे है ॥

समर—गायन ।

(तर्ज़—बैंड)

उठो अब भारत की सन्तान ।
चलो सब मिल कर हों बलिदान ॥
बिना लिये बलिदान तुम्हारा ।
मिलना कठिन सुराज पियारा ॥
सफल तभी हो जन्म तुम्हारा ।
धर्म युद्ध दो ठान ॥ चलो० ॥
खादी की वरदी धारण कर ।
चर्ख़ा शस्त्र सहर्ष ग्रहण कर ॥
वीरों का आदेश श्रवण कर ।
बढ़े चलो मैदान ॥ चलो० ॥
रहै क्रांति चिरजीवी जग में ।
कंटक एक रहे ना मग में ॥
भीष्म शक्ति आये पग पग में ।
बनें सभी बलवान ॥ चलो० ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 744
Date 20-12-71

तीर तोप तलवार हटा कर ।
प्रतिहिंसा का नाम मिटा कर ॥
आज अहिंसा अस्त्र उठा कर ।
जीतेंगे..............मैदान ॥ चलो० ॥
बिना द्वेश का भाव दिखाये ।
बिना शत्रु को दुख पहुँचाये ॥
जो हँसते हँसते मर जाये ।
सत्याग्रही............महान् ॥ चलो० ॥
सत्य सुजनता हृदय धरेंगे ।
सहन शीलता से बिचरेंगे ॥
भारत को स्वाधीन करगे ।
देकर अपने प्रान ॥ चलो० ॥
हिमुईपा भारत वाले हैं ।
आजादी के मतवाले हैं ॥
प्रण पर मर मिटने वाले हैं ।
रक्षक है भगवान ॥ चलो० ॥
हम बलि होने को आये हैं ।
प्राण हथेली पर लाये हैं ॥
हिय स्वतंत्रता भरि लाये हैं ।
पायेंगे निर्वान ॥ चलो० ॥
हम दारुण सन्ताप सहेंगे ।
मरने में "आनन्द" लहेंगे ॥

फिर बन्दे मातरम् कहेंगे ।
है वीरों की आन ॥ चलो०

खादी की महिमा ।

—:०दोहा०:—

खद्दर की चद्दर सदाँ, टिपे दलिद्दर जाहि ।
वा दुरभागी के दरस, लगे पाप नहिं काहि ॥
निर्धन को धन है यही, दीनन को प्रतिपाल ।
निर्बल को बल है यही, है क्रिस्टी को काल ॥
गृहिणी सम खादी निरख, करि संतोष पवित्र ।
वेश्या सम परदेश के, वस्त्र त्यागिये मित्र ॥
रक्त पात बिन देश में, हारें शत्रु महान ।
साठि कोटि घर में बचे, निर्धन हो धनवान ॥
तीर तोप तलवार का, काज कहाँ है आज ।
जो खादी धारण करहु, पावहु पूर्ण सुराज ॥

जवान की पहिचान ।

रहता है बुढ़ापा व जवानी जुदा जुदा ।
है ख़ून औ पानी की रवानी जुदा जुदा ॥
बाज़ार में सरकार फिरादे मशीन गन्न ।
हो जायगा बस दूध औ पानी जुदा जुदा ॥

वीर नवयुवको ।

सुधरे तो इंडिया की तुम्हीं आन बान हो ।
बिगड़े तो ग़ुलामी के तुम्हीं मेजबान हो ॥
तुम मान हो अभिमान हो भारत की शान हो ।
लाखों शहीद नौजवानों के निशान हो ॥
माँ पूँछती है, लाल! अगर बावफ़ा हो तुम ।
कुर्बान होके आज दिखादो कि क्या हो तुम ॥

रण भेरी ।

लावनी

चल दो रण को ऐ भारत की संतानो ।
बल दिखलादो बलि होकर ऐ बलवानो ।

(१)

रण में जाओ हे भारत के रणवीरो ।
हे बलवीरो हे रणधीरो प्रणवीरो ।
निज सत्याग्रह से रिपुदल का दिल चीरो ।
प्रण पर डट जाओ मिट जाओ दल वीरो ।
सब मिलकर के स्वतंत्रताका रण ठानो ।
बल दिखलादो बलि होकर ए बलवानो ॥

(२)

रण में जाओ भारत हित प्राण गँवाओ ।
अब तो भारत जननी की लाज बचाओ ।

इस दीन देश के हेतु आज बलि जाओ।
रिपु दल की जलती ज्वाला में जल जाओ।
तुम कृष्ण भीम अर्जुन की हो संतानो।
बल दिखलादो बलि होकर ऐ बलवानो।

(३)

अब आज़ादी की शुरू जंग कर दो तुम।
बस नमक बना क़ानून भंग कर दो तुम।
बी नौकर शाही सजी तंग कर दो तुम।
इस शांति युद्ध से विश्व दंग कर दो तुम।
अब सेनापति गांधी की आज्ञा मानो।
बलि दिखलादो बलि होकर ऐ बलवानो।

(४)

हिंदू मुसलिम पारसी इसाई भाई।
तुम को घर में लड़ने में लाज न आई।
घर फूट पड़ी औरों ने दिया लड़ाई।
लखि दीन दशा भारत माता बिलखाई।
जननी की लाज बचालो ऐ मरदानो।
बल दिखलादो बलि होकर ऐ बलवानो।

ख़ून की प्यास।

(राग भीम पलासी)

गुंचे अपने मुरझाते हैं क्यों उनकी कली खिला करके।
दुश्मन की प्यास बुझाते हैं हम अपना ख़ून पिला करके।।

ऐ हँसने वालो ख़ूब हंसो, क्या दुनियां अजब तमाशा है ।
दोज़ख़ से गो हम जाते हैं पर तुमको ख़ूब रुला करके ॥
धमकाले हमें डराले तू कर सख़्ती जितना जी चाहे ।
तू ख़ाक मज़ा पायेगा ज़ालिम हमको लाख डरा करके ॥
उनका शेवा है सख़्ती का हमको सहने की आदत है ।
हम फांसी पर भी लटकेंगे ईश्वर का तख़्त हिला करके ॥

प्यारी स्वतंत्रता ।*

प्राण तजेंगे प्रेम से लेंगे मगर स्वतंत्रता ।
देंगे ये शीश शौक़ से, देंगे न पर स्वतंत्रता ॥
भारत हमारा देश है, सब से पियारा देश है ।
काटेंगे इसकी बेड़ियां, देंगे इसे स्वतंत्रता ॥
मंत्र भी है स्वतंत्रता, धर्म भी है स्वतंत्रता ।
कर्म भी है स्वतंत्रता, मर्म भी है स्वतंत्रता ॥
अपने लहू की बूंद भी, मांगेगी जब स्वतंत्रता ।
'आनंद' से मरेंगे हम, लेंगे मगर स्वतंत्रता ॥

* कविवर आनंद कृत श्री छत्रपति शिवाजी नाटक मूल्य ।॥)

रण-आह्वाहन ।

उठो भारत वीरो बलवान।
चलो रणमें होने बलिदान ॥
बिना दिये बलिदान देहका संभव नहीं सुराज ।
सफल करेंगे जीवन अपना रणमें मरकर आज ॥
धर्म का युद्ध दिया है ठान।
चलो रणमें होने बलिदान ॥
दिखलादो मैदाँ में चलकर ताल ठोंक कर यार ।
आज़ादी के दीवाने हैं मरने को तैयार ॥
ख़ुशी से होने को क़ुर्बान ।
चलो रणमें होने बलिदान ।
खादी की वरदी धारण कर चर्खा निशिदिन कात ।
भारत माताकी लज्जा रखनी है तुमको तात ॥
अगर तुम हो भारत संतान।
चलो रणमें होने बलिदान ॥
रहे क्रांति चिरजीवी बोलो मित्र उठाकर हाथ ।
फिर बंदेमातरम् कहो "आनन्द" ध्वनी के साथ ॥
लिया सत्याग्रह शस्त्र प्रधान।
चलो रणमें होने बलिदान ॥
तीर तोप तलवार तेगका बीत गया जुग जान ।
आज अहिंसा अस्त्र उठाकर जीतेंगे मैदान ॥

इसीमें है अपना कल्यान ।
चलो रणमें होने बलिदान ॥
बिना द्वेश और विना क्लेश बिन किये शत्रु अपमान ।
जो हँसते हँसते बलिवेदी पर देदेगा प्रान ॥
वही है सच्चा वीर महान ।
चलो रणमें होने बलिदान ॥
चारों युग तीनों लोकों से युद्ध निराला ठान ।
शांत क्रांति के द्वारा पायेंगे स्वतंत्रता मान ।
इसीमें है भारत की शान ।
चलो रणमें होने बलिदान ॥
सत्य सुजनता सहन शीलता का ले दिव्य कृपाण ।
भारत को स्वाधीन करेंगे देकर अपने प्राण ॥
हमारा रत्तक है भगवान ।
चलो रणमें होने बलिदान ॥

चर्खे से सुराज ।

चर्खे दीनों का कष्ट मिटायेगा तू ।
चर्खे भारत का भार हटायेगा तू ॥
द्वेश के दरिया में अब भारत की नैया बह गई ।
मित्रता सब उठ गई औ(फूट बाक़ी रह गई ।

चर्खे सब को गले से लगायेगा तू ।

भाई भाई में हुआ जब जाति भेदों का सवाल ।
फट गये मोती से दिल और मिट गये पहले ख़याल ॥
चर्खे भेद और भाव मिटायेगा तू ।

शिल्प विद्या के सबब धनवान थे भारत के लोग ।
कौड़ी २ को तरसते हैं उसी भारत के लोग ॥
चर्खे सबको अमीर बनायेगा तू ।

आज गर हिन्दू मुसलमाँ एक दिल हो जायँगे ।
अरमाने दिल "आनन्द" के पूरे सभी हो जायँगे ॥
चर्खे भारत को राज (हमको सुराज) दिलायेगा तू ।

आगरे का शेर ।

जब तलक सरकार का यारो बुलंद इक़बाल है ।
खूं बहाती है हमारा फिर भी माला माल है ॥
लाख बंदूकों मशीनों से डराती है उन्हें ।
जिनके सीने में निहां सत्याग्रह की ढाल है ॥
इस नमक के सिलसिले ने कर दिये दोनों जुदा ।
एक नमक हराम है तो एक नमक हलाल है ॥
भेज देंगे वे हमें गर जेल में क्या हर्ज है ।
हम भी समझेंगे मुबारक दावतें सुसराल है ॥
ज़ार नादिरशाह नीरो की क़बर से पूछलो ।
ज़ालिमों का आख़िरश होता यही अहवाल है ॥

हौसला दूना बढ़ेगा अपना उनके ज़ुल्म से ।
लीडरों को क़ैद करने में भी उनकी चाल है ॥
आगरे का शेर‡ जब से कठहरे में बन्द है ।
हर तरफ़ इक ज़लज़ला है शोर है भोंचाल है ॥
याद रक्खें वो जिन्होंने ये निकाली चाल है ।
आगरे का बच्चा बच्चा आज पालीवाल है ॥

देश के दीवाने ।

हम देश के दीवाने जब रंग जमादेंगे ।
ज़ालिम तेरे नशे को मिट्टी में मिला देंगे ॥
लेकर कढ़ाई तसला जब आग जला देंगे ।
मिट्टी के ज़र्रे ज़र्रे से नोन बना देंगे ॥
ज़िंदा शहीद हैं हम मरने की नहीं परवा ।
मिल कर के ख़ाक में भी इक आग लगादेंगे ॥
बे ख़ौफ़ खड़े होंगे आगे मशीन गन के ।
डरपोक भगोड़ों को इक दम में भगादेंगे ॥

स्त्री स्वयं सेविकाओं का गाना ।

बलवानों की जननी ।

हम बलवानों की जननी हैं तुमको बलवान बनादेंगीं ।
हम अबला हैं या सबला हैं तुमको फिर ध्यान दिलादेंगीं ॥
हम देश भक्ति पर मरती हैं, न्यौछावर तन मन करती हैं ।
हम भारत के दुख हरती हैं, होकर क़ुरबान दिखादेंगी ॥

---

‡पं० श्री कृष्णदत्तजी पालीवाल—सैनिक संपादक ।

हम मद्य प्रचार मिटादेंगी, परदेशी वस्त्र हटा देंगी।
हम अपना शीश कटादेंगी, पर तुम्हें सुराज दिलादेंगी ॥
हम दुर्गा चंडी काली हैं, आज़ादी की मतवाली हैं।
हम नागिन डसने वाली हैं, दुश्मन का दिल दहलादेंगी ॥
हम शांत चित्त हैं ज्ञानी हैं, हम ही झांसी की रानी हैं।
यह अटल प्रतिज्ञा ठानी है, भारत स्वाधीन करादेंगी ॥

उठो देश वालो।

उठो देश वालो, उठो देश वालो।
जगो देश भारत की हालत सम्हालो।
हमारा वतन अब लुटा जारहा है।
हमारा निशां तक मिटा जारहा है।
अभी वक़्त है अपनी बिगड़ी बनालो। उठो० ॥
तुम्हारी पसीने व ख़ूँ की कमाई।
शरम है विलायत के लोगों ने खाई।
जगो अपना खाना व दाना बचालो। उठो० ॥
पिकैटिंग में वालंटियर पिट रहे हैं।
बड़े गर्व से देश पै मिट रहे हैं।
शरम हिंद की देवियों की बचालो। उठो० ॥
किसान अपने भूखे मरे जारहे हैं।
इधर अपने लीडर धरे जारहे हैं।
उठो मातृ भूमि की इज्ज़त बचालो। उठो० ॥

मुद्रक—सूरजभान गुप्त,

केसरी प्रेस, बेलनगंज—आगरा।

श्री मुकुन्द-मंदिर से प्रकाशित तथा प्राप्य वीर रस पूर्ण साहित्यके

अमूल्य रत्न ।

१–पद्य-प्रवेशिका—कविता कोष की कुंजी, साहित्य सुधा का स्रोत, प्राचीन पद्य-प्रणालीकी प्रदर्शिका। मूल्य .... ॥)

२–श्री छत्रपति शिवाजी—वीर रस प्रधान रोमांचकारी घटनाओं से पूर्ण। मँजी हुई भाषा, जोशीली शेरें और चुहचुहाते हुए गानों के साथ हृदय में हिन्दू वीरता का उष्ण रक्त संचारित करने वाला अनेक चित्रों से सजा हुआ १७६ पृष्ठ का रंगमंच के योग्य सर्व श्रेष्ठ ऐतिहासिक नाटक। मूल्य ... ... ।॥)

३–वीर बन्दा वैरागी—सिक्खों के दसवें गुरु गोविंदसिंहजी के वीरतापूर्ण उपदेश से प्रेरित होकर एक अहिंसावादी तपस्वी किस प्रकार अपनी जाति, धर्म और देश के उद्धार के निमित्त रणभूमि में हाहाकार मचा देता है। ओजस्वी और वीरतापूर्ण शेरें तथा सजीव भाषा पढ़के मुर्दों में भी जान आजाती है ... ॥=)

४–आनन्द-सरोज—जिस पद्य-प्रतिभा के कारण कविवर "आनन्द" जी को अनेकों प्रथम पुरस्कारों के अतिरिक्त सुवर्ण तथा रजत पदक प्राप्त हुए हैं, उन्हीं वीरतापूर्ण, सामयिक तथा अमूल्य राष्ट्रीय कविताओं का अद्भुत संग्रह छन्द रचना के नियमों के साथ दिया है। इस पुस्तक को उठाकर यदि आप अधूरा छोड़ दें तो हमारा जिम्मा। मूल्य ... ... ।)

५–बच्चा सक्का या इन्क़लाबे काबुल–जंगे-काबुल का दर्द-अंगेज़, बातसवीर, ज़बरदस्त, तवारीखी उर्दू ड्रामा। मूल्य ... ॥)

६–हिंदी छन्द तालिका–मुख्य मुख्य छन्द बनाने का जेबी चार्ट, कवियोंके बड़े कामकी चीज़। मूल्य ... ...)॥

७–गायन सती परीक्षा नाटक –) ८–गायन शिवाजी नाटक –)

पुस्तकें मिलने का पता—

मैनेजर मुकुन्द-मन्दिर, बेलनगंज–आगरा।